श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग – बी०ए० पार्ट – I 'प्रतिष्ठा'
पत्र – Ist, यूनिट न० – 3
राजनीतिक विचारक – डा० पुखराज जैन
दिनांक – 10 – 07 – 2020

मार्क्स का वर्ग-संघर्ष
[illegible]-भाग 1 —

<u>वर्ग संघर्ष का कारण</u> :→ वर्ग संघर्ष के मूल कारणों पर प्रकाश डालते हुए मार्क्स ने लिखा है कि — आजीविका के आधार पर समाज को दो व्यापक वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। पूँजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग। पूँजीपति वर्ग उत्पादन के साधनों भूमि, पूँजी, कच्चा माल, कारखाने आदि पर स्वामित्व रखते हैं। तथा अपना जीवन निर्वाह करते हैं। और श्रमिक वर्ग अपना श्रम बेचकर अपना जीवनयापन

करता है। दोनो को एक-दूसरे की आवश्यकता है। यदि कारखाना बंद होजाय तो मालिक तथा मजदूर दोनो मरसकते है। इस प्रकार दोनो को एक दूसरे की आवश्यकता है।

फिर भी दोनो के हित अलग-अलग है। जिसके चलते परस्पर विरोध होता है। पूंजीपति अधिक लाभ के लिए कम मजदूरी देना चाहता है। दूसरी ओर मजदूर अधिक मजदूरी के लिये कम मजदूरी या श्रम देना चाहते है। फलत: दोनो के बीच संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। इस प्रकार संघर्ष मे मजदूरो की स्थिति विषम होती है। क्योंकि इन्हें रोज परिश्रम बेचकर अपना पेट भरना पड़ता है। ~~रोज कुआं खोदकर पानी पीना~~ है। पूंजीपति अपने पैसे को इकट्ठा कर सकता है। परन्तु मजदूर अपने पैसे को इकट्ठा नही कर सकता है क्योंकि यह जल्दी नष्ट होने वाली वस्तु है। वह हड़ताल भी नही कर सकता है क्योंकि वह स्वयं, बीबी बच्चो के साथ भूखे मर जायेगा। ऐसी स्थिति मे पूंजीपति को शोषण करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। यदि मजदूर वर्ग मे चेतना जाये तो वह संगठन के माध्यम से विरोध करने लगता है। उससे आपस संघर्ष छिड़ जाता है। इसी संघर्ष के कारण पूंजीवाद का पतन होता है और मजदूरो को विजय मिलती है। क्योंकि पूंजीवाद मे स्वयं विनाश के बीज छुपे होते है।

ये विनाश के बीज निम्नलिखित कारणो से होते है।

(i) पूंजीवाद मे व्यक्तिगत लाभ के लिये उत्पादन होता है।
(ii) उत्पादन पर एकाधिकार होता है।
(iii) पूंजीवाद आर्थिक संकटो का जन्मदाता है।
(iv) इसमे अतिरिक्त मूल्य पूंजीपतियो को प्राप्त होता है।
(v) पूंजीवाद मजदूरो मे एकता जगाता है।
(vi) यह अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक आंदोलन का जन्मदाता है और नारा देता है — दुनिया के मजदूरो एक होजाओ तुम्हे अपने जंजीरो के अतिरिक्त और कुछ नही खोना है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार वर्ग संघर्ष मे पूंजीवाद के पतन और श्रमिक वर्ग की विजय होना निश्चित है। वास्तव मे यह एक महान क्रांतिकारी सिद्धान्त है जो इतिहास को स्पष्ट करने की कुंजी है। इस सिद्धान्त के कारण सन् 1917 मे मार्क्सवादी रूस मे और 1949 मे चीन मे क्रांति हुई। भारत मे नक्सलवाद इसी सिद्धान्त पर आधारित है। मार्क्स के किसी भी सिद्धान्त को चाहे माने या न माने वर्ग संघर्ष का दुरूपयोग चुनौती के रूप मे करते है। क्रमशः —